हुसैन (अ०) की शहादत की मुख़्तसर कहानी

सर जार्ज टामस चीफ़ जस्टिस अवध

हज़रत अली (अ0) पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद (स0) के दामाद थे। मुझे यह बात कुछ बेकार सी मालूम होती है कि मैं यहाँ उन कड़वे तअल्लुक़ात को बयान करूँ जो हज़रत अली (अ0) के ख़ानदान और बनी उमैय्या के हुकमरान ख़ानदान के दरमियान मौजूद थे क्योंकि उनसे आप हज़रात अच्छी तरह वाक़िफ़ हैं लेकिन जिस अज़ीम वाक़ेए की याद मनाने के लिए आज आप जमा हुए हैं उसके लिए बहरहाल उन वाक़ेआत और असरात की तरफ इशारा करना मुनासिब मालूम होता है जिनके नतीजे में इमाम हुसैन ने इतनी बड़ी कुर्बानी और हक़ व सदाक़त से बेनज़ीर वाबस्तगी की मिसाल पेश की।

हज़रत अली अलैहिस्सलाम कूफे की मस्जिद में ऐसी हालत में शहीद किये गये जब वह अपने ख़ालिक़ की बन्दगी में लगे हुए थे। उनके बड़े बेटे हज़रत इमाम हसन (अ0) जो उनकी जगह तख़्ते ख़िलाफत पर बैठे वह एक सुलह पसन्द और इज़्ज़त पसन्द इन्सान थे कुछ महीनों की ख़ाना नशीनी और ख़िलाफत के बाद उन्हें ज़हर से हलाक कर दिया गया। इसके बाद मुआविया ने जो ख़ानदाने बनी उमैय्या के नुमाइन्दे थे हुकूमत मक्का की ख़्वाहिश पूरी की और ख़लीफा बन गये मुआविया पहले शाम के गवर्नर थे लेकिन बाद को हिजाज़ और इराक़ के भी हुक्मरान हो गये थे।

मुआविया की वफात के बाद उनका बेटा यज़ीद उनकी जगह उस सुलहनामे की शर्तों के ख़िलाफ ख़लीफा बन बैठा जो मुआविया और हज़रत इमाम हसन (अ0) के दरमियान हुआ था और जिसके हिसाब से मन्सबे ख़िलाफत हज़रत इमाम हुसैन (अ0) के लिए महफूज़ कर दिया गया था। यज़ीद जाबिर और ज़ालिम हुकमरान था। वह अपने लिए इमाम हुसैन (अ0) की बैअत हासिल करना चाहता था लेकिन इन्तिहाई कोशिशों के बावजूद अपना मक़सद हासिल न कर सका। इसको सब मानते हैं कि इमाम हुसैन (अ0) हक़, इन्साफ और सच्चाई के ज़बरदस्त हामी थे। उन्होंने यज़ीद की हक़दारी को किसी हालत में भी क़बूल करना पसन्द न किया।

इराक़ में कूफी मुसलमानों ने जो यज़ीद की बदइन्तिज़ामी और बेइन्तिहा मज़ालिम से आजिज़ आ चुके थे इमाम हुसैन से यज़ीद के चंगुल से रिहाई पाने के लिए मदद चाही, इमाम हुसैन (अ0) ने जो फितरतन बहादर और हिम्मत वाले थे ख़ौफ और नतीजों से बेपरवाह होकर मुसलमानो को यज़ीद की ज़ालिमाना हुकूमत से नजात दिलाने का पक्का इरादा कर लिया। उन्होंने अपने घर की औरतों और बच्चों और अपने वफ़ादार साथियों के साथ अरब के सुन्सान और झुलसते हुए रेगिस्तान का सफ़र तय किया और कर्बला में जो कूफ़ा से 33 मील के फ़ासले पर है फ़ुरात नदी के पश्चिमी किनारे के क़रीब अपना ख़ेमा लगाया वह कर्बला में 2 मुहर्रम 61 हि0 यानी आज से तेरह सौ बरस पहले पहुँचे थे।

यज़ीद ने एक बड़ी फ़ौज जो कई हज़ार सिपाहियों की थी एक संगदिल कमाण्डर की सरदारी में इमाम हुसैन (अ0) और उनके साथियों को शहीद करने के लिए भेजी। इमाम हुसैन (अ0) से बैअत लेने की कई तरह से कोशिश की गई लेकिन उन्होंने उन तमाम बातों को बहुत हिक़ारत के साथ ठुकरा दिया और तमाम मुसीबतों और ज़िल्लतों का डटकर मुक़ाबला करने के लिए तैयार हो गये। हालांकि उन्हें इसका इल्म था कि वह ला तादाद मुसीबतों में घिरे हुए हैं सिर्फ यही नहीं बल्कि उन्होंने अपने साथियों को इस बात की भी इजाज़त दे दी कि वह अगर बेरहम दुश्मनों के हाथों लाई हुई मौत और तबाही से बचना चाहते हैं तो निहायत ख़ुशी से उनको छोड़कर वापस जा सकते हैं। इमाम हुसैन (अ0) के लिए मदद के तमाम रास्ते बन्द कर दिये गये उनको और उनके साथियों को 7 मुहर्रम से 10 मुहर्रम तक भूखा प्यासा रहना पड़ा। यहाँ तक कि उन्हें बराबर तीन दिन रात एक क़तरा पानी भी अपने सूखे हुए हलक़ तर करने के लिये न मिला। इन तमाम रुकावटों और तकलीफों के बाद भी उन्होंने यज़ीदी फौज का मुक़ाबला किया और देखने में हार गये। इमाम हुसैन (अ0) के साथी एक–एक करके मर्दानावार लड़ते रहे और आख़िरेकार इस कमज़ोरी और लाचारी की वजह से जो भूख और प्यास की वजह से पैदा हो गई थी शहीद होते रहे, इमाम हुसैन (अ0) के ख़ेमे में आग लगा दी गई और उनके अहले हरम को मजबूरन पनाह लेने के लिए ख़ेमा छोड़कर मुक़ाबलतन ज़्यादा महफ़ूज़ मक़ामात को तलाश करना पड़ा। हक़ और सदाक़त को बचाने की कोशिश में उनके बहत्तर साथी जिनमें उनके बच्चे, अज़ीज़ और वफ़ादार साथी शामिल थे शहीद कर दिये गये यहाँ तक कि 6 माह का बच्चा भी मार डाला गया और अकेले इमाम हुसैन (अ0) बाक़ी रह गये, जिन्होंने बहुत ही बहादरी के साथ अपनी जान हक़ और सदाक़त की राह में क़ुर्बान कर दी। उनका सर काट लिया गया और उसको नेज़े की नोक पर बुलन्द करके यज़ीद के दरबार में तोहफ़े के तौर पर भेज दिया गया।

इतिहासकार गबन लिखता हैः ''इमाम हुसैन की शहादत का दर्दनाक मन्ज़र दूर दराज़ ज़माने में भी एक इन्तिहाई सर्द मुहर इन्सान तक का दिल हिला देगा और हमदर्दी का जज़्बा पैदा कर देगा।''

हज़रात! यह है इमाम हुसैन की 57 साल की उम्र में शहादत की मुख़्तसर कहानी। कौन है जो इमाम हुसैन (अ0) की हक़ और सदाक़त को बुलन्द करने वाली इस लड़ाई की बेलाग तारीफ़ किये बग़ैर रह सके? दूसरे के लिए जीने का उसूल और कमज़ोरों और दुखियारों की मदद अपनी ज़िन्दगी का मक़सद बनाने की बेनज़ीर मिसाल इमाम हुसैन (अ0) की बेलौस शख़्सियत से ज़्यादा रौशन कहीं और नहीं मिल सकती जिन्होंने अपनी और अपने महबूब तरीन अज़ीज़ों और साथियों की जान की बाज़ी लगा दी लेकिन एक ज़ालिम और ताक़तवर बादशाह के सामने सर झुकाने से इनकार कर दिया गो कि हक़ और सदाक़त की बेबहा ख़ूबियों की हिफ़ाज़त और दूसरों की भलाई के लिए इमाम हुसैन (अ0) ने आज से तेरह सौ बरस पहले अपनी जान दी थी लेकिन फिर भी उनकी न ख़त्म होने वाली रूह आज भी दुनिया में लातादाद इन्सानों के दिलों पर हुकमरानी कर रही है। और उनकी शहादत की पाकीज़ा यादगार हर साल मुहर्रम के महीने में ताज़ा की जाती है। □□□

(मुहर्रम 1378 हि0)